1. पुल्लिङ्ग
   1. The word entered ends with “a” (अ).
      1. The word ends with any of the following. $sarvanama = array("sarva","viSva","uBa","uBaya","pUrva","para","avara","dakziRa","uttara","apara","aDara","atara","atama","sva",“antara”,"anya","anyatara","itara","tvat","tva","nema","sama”,“sima","sva","antara","tyad","tad","yad","etad","idam","adas","eka","dvi","yuzmad","asmad","Bavat","kim");
         1. सर्वादयः सञ्ज्ञा के तौर पे प्रयुक्त हुए हैं ?
         2. सर्वादयः उपसर्जनीभूत हैं ?
         3. सर्वादयः तृतीया तत्पुरुष समास में प्रयुक्त हुए हैं ?
         4. सर्वादयः द्वन्द्व समास में प्रयुक्त हुए हैं ?
         5. सर्वादयः बहुव्रीहि समास में प्रयुक्त हुए हैं ?
            1. दिक्समास है
            2. दिक्समास नहीं है
         6. उपर से किसी में नहीं प्रयुक्त हुए हैं
            1. The word ends with any of the following. $purva = array("pUrva","para","avara","dakziRa","uttara","apara","aDara");

सञ्ज्ञा है या व्यवस्था के अर्थ में नहीं है

सञ्ज्ञा नहीं है और व्यवस्था के अर्थ में प्रयुक्त हुए हैं ।

* + - * 1. The word ends with $sva = array("sva",);

ज्ञाति या धन के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है

ज्ञाति या धन के अर्थ में प्रयुक्त नहीं हुआ है

* + - * 1. The word ends with $antara = array(“antara”);

बहिर्योग या उपसंव्यान के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है

उसके बाद का शब्द पुरि है ?

नहीं

बहिर्योग या उपसंव्यान के अर्थ में प्रयुक्त नहीं हुआ है

* + - * 1. The word ends with $datara = array(“atara”, “atama”); and !== “anyatama”

डतर / डतम प्रत्यय से शब्द की सिद्धि हुई है

नहीं

* + - * 1. The word ends with $sama = array(“sama”);

सम शब्द सर्व के पर्याय में प्रयुक्त हुआ है

सम शब्द तुल्य के पर्याय में प्रयुक्त हुआ है

* 1. The word entered ends with “A” (आ).
     1. क्या यह आकारान्त धातु है ?
     2. नहीं
  2. The word entered ends with “i” (इ)
     1. The word entered ends with “saKi” (सखि)
        1. प्राधान्य – जैसे कि सुसखा
        2. उपसर्जनीभूत – जैसे कि परमसखा
        3. लाक्षणिक – जैसे कि अतिसखिः (सखीमतिक्रान्तः)
     2. The word endered ends with ‘dvi’ (द्वि)
        1. सञ्ज्ञा है या उपसर्जनीभूत है
        2. सञ्ज्ञा नहीं है और उपसर्जनीभूत नहीं है
  3. The word entered ends with ‘I’ (ई) -> This is a bit complicated. Maybe we should think of something like check boxes.
     1. धातु के परे ई उणादिप्रत्यय है – जैसे कि वातप्रमीः इत्युणादिकः प्रत्ययः ?
     2. ईकार धातु का भाग है – जैसे कि वातप्रमी क्विप्प्रत्ययान्तः ?
     3. ङ्‍यन्त है – जैसे कि बहुश्रेयसी ?
     4. ईकार प्रातिपदिक के पीछे उणादिप्रत्यय से बना है – जैसे कि अतिलक्ष्मी ?
     5. ईकार क्यजन्त या आचारक्विबन्त के परे क्विप्‌प्रत्यय लगने से बना है – जैसे कि कुमारी ?
     6. Check if there is occurrence of the following pattern - $hl-$h-array(“i”,“I”). If yes,
        1. इवर्ण से पूर्व का संयोग धातु का अवयव है – जैसे कि सुश्री ?
        2. नहीं – जैसे कि उन्नी.
     7. नित्यस्त्रीलिङ्गत्व है – जैसे कि प्रधी (प्रकृष्टा धीर्यस्य सः)
     8. नित्यस्त्रीलिङ्गत्व नहीं है – जैसे कि प्रधी (प्रध्यायतीति)
     9. पूर्वपद गतिकारकेतर है
     10. पूर्वपद गतिकारकेतर नहीं है
     11. सखी – सखायमिच्छति
     12. सखी – सखमिच्छति
     13. The teaching material says there are six types
         1. अनदीसञ्ज्ञकः अधातुः – वातप्रमी (इको यणचि, अमि पूर्वरूपम्‌, शसि पूर्वसवर्णदीर्घः, ङौ सवर्णदीर्घः)
         2. नदीसञ्ज्ञकः अधातुः

(सम्बुद्धिह्रस्वः, ङित्सु आडागमः, आमि नुडागमः, ङेरामादेशः, इको यणचि, अमि पूर्वरूपम्, शसि पूर्वसवर्णदीर्घः, ङौ सवर्णदीर्घः)

* + - * 1. ङ्‍यन्त – बहुश्रेयसी (सुलोपः)
        2. अङ्‍यन्त – अतिलक्ष्मीः (न सुलोपः)
      1. अनदीसञ्ज्ञकः धातुः (असंयोगपूर्वकः इवर्णः, अनेकाच्‌ अङ्गम्‌) – प्रधी, वातप्रमी (क्विबन्त)

(अजादिषु प्रत्ययेषु एरनेकाचो… इति यणादेशः)

* + - * 1. नीधात्वन्त – उन्नीः, ग्रामणीः (ङेरामादेशः)
        2. सखा – (सखायमिच्छति) – (अनङ्‌णित्त्वे, ङसिङसोरुत्त्वम्‌)
        3. सखीः, सुखीः, सुतीः, लूनीः, क्षामीः, प्रस्तीमीः (ख्यत्यात्परस्य इत्यनेन ङसिङसोरुत्त्वम्‌)
      1. नदीसञ्ज्ञकः धातुः (असंयोगपूर्वकः इवर्णः, अनेकाच्‍अङ्गम्‌)

(सम्बुद्धिह्रस्वः, ङित्सु आडागमः, आमि नुडागमः, ङेरामादेशः, अजादिषु प्रत्ययेषु एरनेकाचो… इति यणादेशः)

* + - * 1. ङ्‍यन्त – कुमारी (ङ्‍यन्तत्वात्‌ सुलोपः)
        2. अङ्‍यन्त - प्रकृष्टा धीर्यस्य सः प्रधीः – (अङ्‍यन्तत्वान्न सुलोपः)
      1. अनदीसञ्ज्ञकः धातुः (संयोगपूर्वकः इवर्णः / एकाच्‌ अङ्गम्‌ / गतिकारकेतरपूर्वकः) या सुधीशब्दः

(अजादिषु प्रत्ययेषु ‘अचिश्नुधातुभ्रुवां.. इतीयङादेशः)

* + - * 1. नीः (ङेरामादेशः)
        2. अङ्‍यन्त - यवक्रीः, सुश्रीः (अङ्‍यन्तत्वान्न सुलोपः), सुधी:, शुष्कीः, पक्वीः इत्यादि
      1. नदीसञ्ज्ञकः धातुः (संयोगपूर्वकः इवर्णः / एकाच्‌अङ्गम्‌/ गतिकारकेतरपूर्वकः ) – शुद्धधीः, परमधीः, दुर्धीः, वृश्चिकभीः

(सम्बुद्धिह्रस्वः, ङित्सु आडागमः, आमि नुडागमः, ङेरामादेशः, अजादिषु प्रत्ययेषु इयङादेशः)

* 1. The word ends with U (ऊ).
     1. अनदीसञ्ज्ञकः अधातुः – हूहू (इको यणचि, अमि पूर्वरूपम्‌, शसि पूर्वसवर्णदीर्घः)
     2. नदीसञ्ज्ञकः अधातुः - अतिचमूः(सम्बुद्धिह्रस्वः, ङित्सु आडागमः, आमि नुडागमः, ङेरामादेशः, इको यणचि, अमि पूर्वरूपम्, शसि पूर्वसवर्णदीर्घः, ङौ सवर्णदीर्घः)
     3. धातुः (असंयोगपूर्वकः उवर्णः, अनेकाच्‌अङ्गम्‌, गतिकारकपूर्वपदम्‌) – खलपूः, सुलूः, उल्लूः(अजादिषु प्रत्ययेषु ओः सुपि इति यणादेशः)
     4. धातुः (संयोगपूर्वकः उवर्णः / एकाच्‌अङ्गम्‌/ गतिकारकेतरपूर्वकः) – कटप्रूः, लूः, परमलूः (अजादिषु प्रत्ययेषु ‘अचिश्नुधातुभ्रुवां.. इत्युवङादेशः)
     5. भूशब्दान्तं प्रातिपदिकम्‌
        + 1. वर्षाभू, करभू, दृन्भू, पुनर्भू (वर्षाभ्वश्च / दृन्करपुनर्पूर्वस्य भुवो यण्‌वाच्यः)
          2. अन्य - (न भूसुधियोः इति यण्‌निषेधः । अचिश्नुधातु इत्यनेन उवङ्‌।)
  2. The word ends with ‘catur’ (चतुर्‌)
     1. $second=== “Am” and $so!== “catur”
        1. उपसर्जनीभूत
        2. प्राधान्य
  3. The word is “idam” / “idakam”
     1. अन्वादेश है
     2. अन्वादेश नहीं
  4. The word ends with ‘n’
     1. The word ends with array(“paYcan”, “saptan”, “zwan”, “navan”, ‘daSan”); and is not equal to them.
        1. समास में नान्त शब्द उपसर्जनीभूत है ?
        2. उपसर्जनीभूत नहीं है ।
  5. The word ends with ‘j’
     1. क्विन्‌प्रत्ययान्त है ?
     2. क्विन्‍प्रत्ययान्त नहीं है ।
     3. ends with array(“BrAj”)
        1. भ्राज्‌धातु फणादि है ?
        2. नहीं
  6. The word ends with $tyadadi = array("dvi","tyad","tad","etad","idam","adas","eka","idakam");
     1. त्यदादि शब्द सञ्ज्ञा या उपसर्जनीभूत के रूप में प्रयुक्त हुए हैं ?
        1. The word belongs to array(“etad”, “idam”);
           1. अन्वादेश है ?
           2. अन्वादेश नहीं है ।
     2. त्यदादि शब्द सञ्ज्ञा या उपसर्जनीभूत नहीं है ।
  7. The word ends with array(“smad”,’yuzmad”) and !in\_array(“asmad”, “yuzmad”)
     1. त्वमतिक्रान्तः
     2. युवामतिक्रान्तः
     3. युष्मानतिक्रान्तः (Exact description is pending. Will clarify later)
  8. The word is in\_array(‘asmad’, ‘yuzmad’) && in\_array($so,array(‘am’, ‘Ow’, ‘Sas’, ‘Ne’, ‘ByAm’, ‘Byas’, ‘Nas’, ‘os’, ‘Am’)
     1. अस्मद्‌/ युष्मद्‌का प्रयोग पद के बाद में नहीं हुआ है । (निषेध)
     2. अस्मद्‌/ युष्मद्‌का प्रयोग पाद के प्रारम्भ में हुआ है । (निषेध)
     3. अस्मद्‌/ युष्मद्‌का च, वा, हा, अह या एव से साक्षात्‌योग है । (निषेध)
     4. अस्मद्‌/ युष्मद्‌का अचाक्षुषज्ञानार्थ धातु से योग है । (निषेध)
     5. उपर में से कोई नहीं
        1. अन्वादेश है (नित्य)
           1. विद्यमानपूर्व प्रथमान्त शब्द के परे अस्मद्‌/ युष्मद्‌हैं (विभाषा)

आमन्त्रित से परे हैं (निषेध)

विशेष्य से परे समानाधिकरण विशेषण है (नित्य)

बहुवचन है (विभाषा)

बहुवचन नहीं है (नित्य)

विशेष्य से परे समानाधिकरण विशेषण नहीं है (निषेध)

आमन्त्रित से परे नहीं है (विभाषा)

* + - * 1. अस्मद्‌/ युष्मद्‌विद्यमानपूर्व प्रथमान्त शब्द के परे नहीं हैं (नित्य)
      1. अन्वादेश नहीं है (विभाषा)
  1. The word ends with array(“aYcu!”) as the first word.
     1. क्विन्‌प्रत्ययान्त है
        1. पूजा के अर्थ में प्रयुक्त है ?
        2. पूजा के अर्थ में प्रयुक्त नहीं है ।
     2. क्विन्‍प्रत्ययान्त नहीं है
  2. The first word ends with array(“Bavat”).
     1. भातेर्डवतु ?
     2. भूधातोः शतृप्रत्ययः ?
  3. The first word ends with array(“takz”, “rakz”)
     1. ण्यन्त
     2. अण्यन्त

1. स्त्रीलिङ्ग
   1. The word ends with ‘A’ (आ)
      1. शब्द आबन्त नहीं है – जैसे कि गोपा?
      2. शब्द आबन्त है - जैसे कि रमा
         1. Ends with $sarvanamastri = array("sarvA","viSvA","uBA","uBayA","atarA","atamA","anyA","anyatarA","itarA","tvA","nemA","simA","pUrvA","parA","avarA","dakziRA","uttarA","aparA","aDarA","svA","antarA","ekA","dvA",);
            1. Belongs to $diksamAsa = array(“uttarapUrvA”, “dakziRapUrvA”, “uttarapaScimA”, “dakziRapaScimA”);

दिक्समास बहुव्रीहि है ? – जैसे कि उत्तर और पूर्व के बीच की दिशा उत्तरपूर्वा

नहीं – जैसे कि जिस के लिये उत्तर ही पूर्व है ऐसी उन्मुग्धा उत्तरपूर्वा

* + - * 1. ends with antarA

बहिर्योग / उपसंव्यान

अन्तरा के बाद का शब्द पुरि है

नहीं

बहिर्योग / उपसंव्यान नहीं

* 1. The word ends with ‘i’ (इ)
     1. Ends with ‘tri’ and is not ‘tri’
        1. त्रिशब्द स्त्रीलिङ्ग में नहीं है
        2. त्रिशब्द स्त्रीलिङ्ग में है
  2. The word ends with ‘I’ (ई)
     1. ङ्‍यन्त
     2. औणादिक
     3. धातुनिष्पन्न ईकार
     4. प्रधी शब्द
        1. प्रध्यायतीति प्रधीः
           1. वृत्तिकारादीनां मते लक्ष्मीवद्रूपम्‌
           2. कैयटमते तु पुंवद्रूपम्‌
        2. प्रकृष्टा धीः (लक्ष्मीवद्‌, अमि शसि च प्रध्यम्‌, प्रध्यः इति विशेषः)
     5. सुधी
        1. सुष्ठु धीः यस्याः सा, सुष्ठु ध्यायतीति
           1. वृत्तिकारमते श्रीवत्‌
           2. मतान्तरे पुंवत्‌
        2. सुष्ठु धीः (श्रीवत्‌)
     6. ग्रामणीः (पुंवत्‌)
  3. Ends with ‘U’ (ऊ)
     1. वधूः – गौरीवत्‌
     2. भ्रूः – श्रीवत्‌
     3. खलपूः – पुंवत्‌
     4. पुनर्भूः – दृन्करपुनः... से यण्‌तथा नदीकार्य
        1. $so===”Am”
           1. समास है

समास का उत्तरपद एकाच्‌है और पूर्वपद में रकार या षकार है

समास का उत्तरपद एकाच्‌नहीं है या पूर्वपद में रकार या षकार नहीं है

* + - * 1. समास नहीं
    1. वर्षाभूः
    2. स्वयम्भूः - नित्यस्त्रीलिङ्गत्वाभावात्‌न नदीसञ्ज्ञा । अङ्‍यन्तत्वान्न सुलोपः ।

1. नपुंसकलिङ्ग
   1. ends with $ik=array(“i”, “I”, “u”, “U”, “f”, “F”, “x”, “X”);
      1. भाषितपुंस्क है ?
         1. ends with ‘I’
         2. अनदीसञ्ज्ञकः अधातुः – वातप्रमी (इको यणचि, अमि पूर्वरूपम्‌, शसि पूर्वसवर्णदीर्घः, ङौ सवर्णदीर्घः)
         3. नदीसञ्ज्ञकः अधातुः

(सम्बुद्धिह्रस्वः, ङित्सु आडागमः, आमि नुडागमः, ङेरामादेशः, इको यणचि, अमि पूर्वरूपम्, शसि पूर्वसवर्णदीर्घः, ङौ सवर्णदीर्घः)

* + - * 1. ङ्‍यन्त – बहुश्रेयसी (सुलोपः)
        2. अङ्‍यन्त – अतिलक्ष्मीः (न सुलोपः)
      1. अनदीसञ्ज्ञकः धातुः (असंयोगपूर्वकः इवर्णः, अनेकाच्‌अङ्गम्‌) – प्रधी, वातप्रमी (क्विबन्त)

(अजादिषु प्रत्ययेषु एरनेकाचो… इति यणादेशः)

* + - * 1. नीधात्वन्त – उन्नीः, ग्रामणीः (ङेरामादेशः)
        2. सखा – (सखायमिच्छति) – (अनङ्‌णित्त्वे, ङसिङसोरुत्त्वम्‌)
        3. सखीः, सुखीः, सुतीः, लूनीः, क्षामीः, प्रस्तीमीः (ख्यत्यात्परस्य इत्यनेन ङसिङसोरुत्त्वम्‌)
      1. नदीसञ्ज्ञकः धातुः (असंयोगपूर्वकः इवर्णः, अनेकाच्‍अङ्गम्‌)

(सम्बुद्धिह्रस्वः, ङित्सु आडागमः, आमि नुडागमः, ङेरामादेशः, अजादिषु प्रत्ययेषु एरनेकाचो… इति यणादेशः)

* + - * 1. ङ्‍यन्त – कुमारी (ङ्‍यन्तत्वात्‌सुलोपः)
        2. अङ्‍यन्त - प्रकृष्टा धीर्यस्य सः प्रधीः – (अङ्‍यन्तत्वान्न सुलोपः)
      1. अनदीसञ्ज्ञकः धातुः (संयोगपूर्वकः इवर्णः / एकाच्‌अङ्गम्‌/ गतिकारकेतरपूर्वकः / सुधीशब्दः)

(अजादिषु प्रत्ययेषु ‘अचिश्नुधातुभ्रुवां.. इतीयङादेशः)

* + - * 1. नीः (ङेरामादेशः)
        2. अङ्‍यन्त - यवक्रीः, सुश्रीः (अङ्‍यन्तत्वान्न सुलोपः)
        3. सुधी, शुष्कीः, पक्वीः इत्यादि
      1. नदीसञ्ज्ञकः धातुः (संयोगपूर्वकः इवर्णः / एकाच्‌अङ्गम्‌/ गतिकारकेतरपूर्वकः ) – शुद्धधीः, परमधीः, दुर्धीः, वृश्चिकभीः

(सम्बुद्धिह्रस्वः, ङित्सु आडागमः, आमि नुडागमः, ङेरामादेशः, अजादिषु प्रत्ययेषु इयङादेशः)

* + 1. भाषितपुंस्क नहीं है ।